10

मसीही चंदा

जो कुछ हमें प्रभु से मिला है, उसके अनुसार और उसके अनुपात में उसे लौटाने का हमारे पास कोई कारण नहीं है। जो कुछ भी हमारे पास है वह उसी का दिया हुआ है। हमारे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें मिला न हो (1 कुरिन्थियों 4:7)। जब हम देते हैं तो हम उन दानों में से देते हैं, जो उसने हमें दिए।

देना नये नियम के मुख्य विषयों में से एक नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं है कि यीशु और नये नियम के लेखकों ने धन के इस्तेमाल पर कोई शिक्षा नहीं दी, क्योंकि वह बाइबल के मुख्य विषयों में से एक है।

धन पर यीशु की शिक्षाएं

पहाड़ी उपदेश में यीशु ने कहा:

> अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं (मत्ती 6:19, 20)।

धन के प्रति ऐसे विचार का आधार विश्वास है। यीशु ने आगे कहा, ''इसलिए जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो हे अल्पविश्वासियो, तुम को वह क्योंकर न पहिनाएगा?'' (मत्ती 6:30)। जब हम इस विश्वास के साथ देते हैं कि जो हम दे रहे हैं परमेश्वर उसके अनुसार हमें लौटा देगा तब हमारा देना सबसे बढ़िया है (2 कुरिन्थियों 9:6 10, 11)।

निर्धनों को दान देने पर चर्चा करते हुए यीशु ने कहा कि यह गुप्त में और बिना दिखावे के होना चाहिए। परमेश्वर उन्हें ही प्रतिफल देता है जो इस प्रकार देते हैं (मत्ती 6:1-4)। शायद ज़रूरतमंदों की सहायता इस नियम से संचालित होनी चाहिए कि ''जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो'' (मत्ती 7:12)।

यीशु ने एक धनवान हाकिम को अपना सब कुछ बेचकर निर्धनों को देने के लिए कहा था। उसने यह भी कहा कि ''मेरे पीछे हो ले'' (मत्ती 19:21ख)। स्पष्टतया उस जवान की सम्पत्ति ने उसे अपने वश में किया हुआ था। जब तक वह उसके पास थी वह बिना लड़खड़ाए यीशु के पीछे नहीं चल सकता था। वह जवान उदास होकर चला गया (मत्ती 19:22)। इसके विपरीत प्रेरितों ने यीशु के साथ जाने के लिए अपना सब कुछ छोड़ दिया था (लूका 5:11)। इन उदाहरणों से हमें अपने आपको किसी भी ऐसी चीज़ से जो हमें यीशु के पीछे चलने से रोक सकती है, चाहे वह

धन, रिश्तेदार, कारोबार या जो भी हो, से अलग होना सीखना चाहिए।

सूर और सैदा के तटीय क्षेत्र में सिखाते हुए यीशु ने कहा:

> दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा: लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा (लूका 6:38)।

एक और अवसर पर यीशु ने कहा, ''अपनी संपत्ति बेचकर दान कर दो; और अपने लिए बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात् स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं और जिस के निकट चोर नहीं जाता, और कीड़ा नहीं बिगाड़ता'' (लूका 12:33)।

फरीसियों द्वारा परीक्षा लिए जाने पर यीशु ने बताया कि हमें जो सरकार का है वह सरकार को देना चाहिए और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को (मत्ती 22:21)। यदि हम परमेश्वर को नहीं दे पाते तो हम वह रख रहे हैं जो वास्तव में उसका है जब हम वैसे नहीं देते जैसे हमें देना चाहिए तो हम उसे जो परमेश्वर का है अपने पास रख रहे हैं, जो कि परमेश्वर को लूटना है (देखें मलाकी 3:8)।

आरम्भिक मसीही लोगों द्वारा धन का इस्तेमाल

आरम्भिक कलीसिया के कुछ लोगों को जब आवश्यकता पड़ी तो दूसरे सदस्यों ने जहां तक हो सका उनकी सहायता की। उन्होंने अपना सब कुछ नहीं बेचा पर अपनी कुछ चीज़ बेच डाली ताकि ज़रूरतमंदों की ज़रूरतें पूरी हो सकें (प्रेरितों 2:45; 4:36, 37)। उन्होंने अपने घर नहीं बेचे। जैसा कि इस तथ्य से स्पष्ट है कि मसीही लोगों के अपने घर होने के बारे में बताया गया है (प्रेरितों 12:12; 21:8; रोमियों 16:5; 1 कुरिन्थियों 16:19; कुलुस्सियों 4:15; फिलेमोन 2; 2 यूहन्ना 10)। लक्ष्य मसीही लोगों को सब कुछ बराबर बांटना नहीं बल्कि जरूरतमंदों की जरूरत पूरी करना था। परोपकारी सहायता हर व्यक्ति की आवश्यकता के आधार पर दी गई थी (प्रेरितों 2:45; 4:35)। **हमें देना है** ...

- *लगातार*-सप्ताह के पहले दिन (1 कुरिन्थियों 16:2)।
- *आमदनी के अनुसार*-जैसा किसी को आशीष मिली हो (1 कुरिन्थियों 16:2)।
- *योग्यता के अनुसार*-जो कुछ हमारे पास है उसके आधार पर (2 कुरिन्थियों 8:12)।
- *उद्देश्य पूर्वक*-जैसा मन में ठाना हो (2 कुरिन्थियों 9:7)।
- *आनन्द से*-कुड़कुड़ाते हुए नहीं (2 कुरिन्थियों 9:7)।
- *उदारता से*-फ़िजूल खर्ची से नहीं पर खुले दिल से (2 कुरिन्थियों 9:7; रोमियों 12:8)।
- *स्वेच्छा से*-दबाव से नहीं (2 कुरिन्थियों 9:7)।

हम परमेश्वर की आशीषों का इस्तेमाल जैसे चाहें वैसे कर सकते हैं परन्तु हमें उन आशिषों के इस्तेमाल के ढंग का हिसाब देना पड़ेगा (मत्ती 25:19; लूका 16:2; यूहन्ना 19:15; देखें प्रेरितों

5:4)। परमेश्वर हम से उसके जो उसने हमें दिया है, अच्छे भण्डारी होने की उम्मीद करता है। ''जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों की नाईं एक दूसरे की सेवा में लगाए'' (1 पतरस 4:10)। जो कुछ भी हमारे पास है वह सब परमेश्वर का है (प्रेरितों 4:32)। ''क्योंकि पृथ्वी और उसकी भरपूरी प्रभु की है'' (1 कुरन्थियों 10:26)। पौलुस ने पूछा, ''तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया?'' (1 कुरिन्थियों 4:7) इस प्रश्न का उत्तर है ''कुछ भी नहीं।'' जब हम देते हैं तो हम परमेश्वर को उस का जो उसने हमें दिया है केवल एक भाग दे रहे होते हैं।

''तेरा तुझ को देते'' के अर्थ वाले गीत में बाइबल की शिक्षा को बड़ी खूबसूरती से दिखाया गया है:

हम तेरा ही तुझ को देते हैं,
दान चाहे कोई भी क्यों न हो;
जो कुछ हमारे पास है वह तेरा ही है,
हे प्रभु, भरोसा तेरी ओर से ही है।

काश हम सच्चे भण्डारियों की तरह
इसी तरह तुझ से बहुतायत से पायें,
और जैसे तू आशीष दे, बड़े आनन्द से,
अपने पहले फल तुझे दें।[1]

यदि हम अपने आर्थिक मामलों का प्रबन्ध इस प्रकार करें कि हम प्रभु को बहुतायत से न दे पायें तो हम अच्छे भण्डारी नहीं हैं। देने के बाद हमें उसे जो हमारे पास बचा है लापरवाही से इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। जो कुछ हमने अपने पास रखा है, उसके इस्तेमाल के ढंग की ज़िम्मेदारी भी हमारे ऊपर वैसे ही है जैसे उसने हमें दिया है।

परमेश्वर ने हमें आश्वस्त किया है कि यदि हम उदारता से देंगे तो उससे उदारता से ही पाएंगे। हम वही काटेंगे जो बोते हैं (2 कुरिन्थियों 9:6; गलातियों 6:7)। किसान उतनी ही फसल होने की उम्मीद कर सकता है, जितना उसने बीज बोया हो। यदि हम परमेश्वर से हमें उदारता से देने की उम्मीद करते हैं तो हमें भी उसे उदारता से देना होगा। वह उनसे जो हर्ष से देते हैं प्रेम करता है (2 कुरिन्थियों 9:7)।

जब हम परमेश्वर को देते हैं और वह हमें देता है तो इसका कारण यह नहीं कि हम अपनी स्वार्थी इच्छाओं पर विलासितापूर्ण खर्च कर दें। याकूब ने मसीही लोगों को लिखा, ''तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिए कि बुरी इच्छा से मांगते हो, ताकि अपने भोग-विलास में उड़ा दो।'' (याकूब 4:3)। हमारे देने के बदले में परमेश्वर हमें आशिषें देता है ताकि हम उसके काम को समर्थन देना जारी रख सकें:

सो जो बोने वाले को बीज, और भोजन के लिए रोटी देता है वह तुम्हें बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा; और तुम्हारे धर्म के फलों को बढ़ाएगा। कि तुम हर बात में सब प्रकार की

उदारता के लिए जो हमारे द्वारा परमेश्वर को धन्यवाद करती है, धनवान किए जाओ (2 कुरिन्थियों 9:10, 11)।

हमारे देने का आधार स्वार्थी उद्देश्य नहीं होना चाहिए। इसलिए न दें कि जिससे हमारी अपनी सम्पत्तियां बढ़ सकें; मनोरंजन, आनन्द और विलासिता के लिए अपनी लालसाओं को पूरा कर सके; या अपने सामाजिक स्तर को बढ़ा सकें। देने का हमारा उद्देश्य परमेश्वर के काम को समर्थन देना होना चाहिए। जो हमें मिलता है यदि उसके इस्तेमाल में हम परमेश्वर को पहल देते हैं कि उसका काम बढ़े तो हम देखेंगे कि वह हमें सम्भालता है (मत्ती 6:33) और हम भले उद्देश्यों के लिए देना जारी रख पाएंगे। हमें यह उम्मीद रखते हुए देना चाहिए कि परमेश्वर हमें देता है ताकि हम अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकें और बदले में हमारे पास उसे देने के लिए बहुतायत से हो।

दान का नाप

दान की महानता कैसे नापी जाती है? इसे निम्न तरीकों से नापा जा सकता है:

1. *दान की कीमत।* प्रेरितों ने जब धनवानों को मन्दिर को भण्डार में बहुत धन डालते देखा तो वे उनसे प्रभावित हुए। यीशु को कोई फर्क नहीं पड़ा। उसने यह नहीं कहा कि उनके दान स्वीकार्य नहीं हैं, पर उसने कहा कि उनके दान सबसे अधिक नहीं हैं (मरकुस 12:41-44)।

2. *देने वाले के पास जो है उसकी तुलना में दान की राशि।* ''दान उसके अनुसार ग्रहण होता है जो उसके पास है, न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं है'' (2 कुरिन्थियों 8:12)। यीशु ने कहा कि निर्धन विधवा ने सबसे बढ़कर दान दिया क्योंकि धनवानों ने अपनी बहुतायत में से दिया था पर विधवा ने वह सब दे दिया जो उसके पास था (मरकुस 12:41-44)।

3. *देने वाले के लिए कीमत।* दाऊद परमेश्वर को बलिदान भेंट करने के लिए अरौना का खेत मोल लेना चाहता था। राजा दाऊद का आदर करते हुए अरौना उसे यह सम्पत्ति देने को तैयार था। दाऊद का जवाब था, ''मैं ये वस्तुएं तुझ से अवश्य दाम देकर लूंगा; मैं अपने परमेश्वर यहोवा को सेंतमेंत के होमबलि नहीं चढ़ाने का'' (2 शमूएल 24:24ख)।

4. *देने वाले के लिए मूल्य।* दान बहुत कीमती हो सकता है पर जब तक देने वाले के लिए इसका महत्व न हो उसका देना बेकार है या किसी काम का नहीं। परमेश्वर ने हमें यीशु के बहुमूल्य लहू के साथ छुड़ाया (1 पतरस 1:18, 19)। यीशु स्वर्ग की सेनाओं में सबसे ऊपर था। सो वह स्वर्ग की ओर से दिया जा सकने वाला दान था।

5. *देने वाले की निजी भागीदारी।* मकदुनिया के लोगों ने केवल दान ही नहीं दिए उन्होंने अपने आप को भी दे दिया (2 कुरिन्थियों 8:5)। बहुत बार अपना समय देने या दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने आपको देने से पैसे देना अधिक आसान होता है।

6. *पाने वाले की आवश्यकता और पाने वाले के लिए उसकी कीमत।* बड़ा और कीमती उपहार तब तक बड़ा नहीं हो सकता जब तक यह पाने वाले की आवश्यकता को पूरा न करता हो। यीशु का दान बड़ा दान इसलिए है क्योंकि उसने पाप का हमारा कर्ज़ चुका दिया जिसे हम नहीं चुका सकते थे (रोमियों 5:8)।

7. *पाने वाले का व्यवहार।* ऐसा दान जो पाने वाले की आवश्यकता को पूरा भी करता हो बड़ा नहीं हो सकता यदि पाने वाला इसे ले न। जो दान किसी के लिए बड़ा हो सकता है वही दूसरों के लिए जो उस दान को महत्व नहीं देते किसी काम का नहीं होगा (देखें प्रेरितों 13:46; रोमियों 2:4, 5)। उनके लिए जिन्हें उद्धार मिल गया है यीशु सब दानों से बड़ा है पर जो उसकी बात नहीं मानते उनके लिए वह ''ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान'' है (1 पतरस 2:8)।

8. *देने वाले का व्यवहार।* देने वाले का व्यवहार शायद सबसे बड़ी परख है जो दान को बड़ा बनाती है। प्रेम के कारण परमेश्वर ने यीशु को दिया, और यीशु ने अपने आपको दिया (यूहन्ना 3:16)। बिना प्रेम के देने वाले के लिए दान की कोई कीमत नहीं है (1 कुरिन्थियों 13:3)।

दानों का अवलोकन करते समय हमें यह मानना पड़ेगा कि दान चाहे कितने भी हों, यीशु सबसे बड़ा दान है जो कभी दिया गया हो। वह उन सभी मानकों को पूरा करता है, जिनसे हम दान की कीमत नाप सकते हों। हमें परमेश्वर और यीशु के उदाहरण का अनुसरण करके बड़े देने वाले बनना है।

दशमांश

क्या मसीही चंदे के लिए दशमांश देना आवश्यक आधार है ? क्या मसीही लोगों को दशमांश देना चाहिए ?

''दशमांश'' देने का अर्थ दसवां भाग देना है। बाइबल में दसवां भाग देने का पहला उल्लेख मलकी सुदेक को अब्राहम के दान का था, जो लड़ाई में हुई जीत का दसवां भाग था (उत्पत्ति 14:20)। बाइबल में केवल यहीं पर मिलता है कि अब्राहम ने दसवां भाग दिया। याकूब ने परमेश्वर के साथ शपथ खाई कि यदि वह उसे समृद्ध करे और उसे अपने पिता के घर सुरक्षित लौटा दे, तो वह उसे दसवां भाग देगा (उत्पत्ति 28:20-22)। बाइबल ऐसा कोई संकेत नहीं देती कि उसने अपना दसवां भाग कब या किसे दिया। व्यवस्था दिए जाने से पहले दसवां भाग देने के केवल यही हवाले हैं।

बाइबल में ''दशमांश'' शब्द पहली बार व्यवस्था में मिलता है जो सीनै पर्वत पर परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएलियों पर प्रकट की (लैव्यव्यवस्था 27:30)। व्यवस्था लेवी के गोत्र के लिए वेतन के रूप में दशमांश देने की मांग करती थी। इससे उन्हें मन्दिर के लिए सम्भाल करने के लिए बलिदान और सेवा करने के लिए सहायता मिल जाती थी (गिनती 1:50, 51)। उनके काम के समर्थन के लिए इस्राएलियों द्वारा दिया जाने वाला धन लोगों से मांगे जाने वाले कर की तरह स्वेच्छा से दिया गया दान नहीं है (लैव्यव्यवस्था 27:30)।

> फिर मिलापवाले तम्बू की जो सेवा लेवी करते हैं उसके बदले मैं उनको इस्राएलियों का सब दशमांश उनका निज भाग कर देता हूं (गिनती 18:21)।
>
> परन्तु लेवी मिलापवाले तम्बू की सेवा किया करें, ... और इस्राएलियों के बीच उनका कोई निज भाग न होगा। क्योंकि इस्राएली जो दशमांश यहोवा को उठाई हुई भेंट करके देखें,

> उसे मैं लेवियों को निज भाग करके देता हूं, इसी लिए मैं ने उनके विषय में कहा है कि इस्राएलियों के बीच कोई भाग उन को न मिले (गिनती 18:23, 24)।

इस्राएलियों के कनान में प्रवेश करने के समय देश आगे की विरासत के लिए कबीलों में बंट गया था। लेवी के गोत्र को दिया गया सम्पत्ति का भाग अन्य गोत्रों को दिए जाने वाले भाग के बराबर नहीं था। परमेश्वर ने अन्य गोत्रों द्वारा दिए जाने वलो दशमांश उन्हें बांटकर उनकी आवश्यकताओं का उपाय किया। दशमांश स्वेच्छा से दी गई भेंट के रूप में नहीं बल्कि कर्ज़ के रूप में चुकाना था (व्यवस्थाविवरण 26:12)।

दान, मन्नत की भेंटें और स्वेच्छा से दी गई भेंटें दशमांश के अलावा दी जानी थीं (लैव्यवयवस्था 23:37, 38)। याजकों को दशमांशों के साथ-साथ इन भेंटों से भी लाभ होता था। मन्दिर की देखभाल, निर्धनों को दान और अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति अन्य दानों से (व्यवस्थाविवरण 16:10, 11) और खेतों से इकट्ठे किए अनाज से होती थी (व्यवस्थाविवरण 24:19-21)।

इस्राएली लोग अपनी उन्नति का दशमांश देने में नाकाम रहे थे और उन्होंने व्यवस्था के अनुसार मांगी गई अन्य भेंटें देने को नज़रअन्दाज कर दिया था इसलिए परमेश्वर ने उन से अपने उपाय रख लिए। उसने इसे उसे लूटना माना।

> क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है ? देखो, तुम मुझ को धोखा देते हो, और तौभी पूछते हो कि हम ने किस बात में तुझे लूटा है ? दशमांश और उठाने की भेंटों में। तुम पर भारी शाप पड़ा है, क्योंकि तुम मुझे लूटते हो; वरन सारी जाति ऐसा करती है। सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूं कि नहीं। मैं तुम्हारे लिये नाश करनेवाले को ऐसा घुड़कूंगा कि वह तुम्हारी भूमि की उपज नाश न करेगा, और तुम्हारी दाखलताओं के फल कच्चे न गिरेंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। तब सारी जातियां तुम को धन्य कहेंगी, क्योंकि तुम्हारा देश मनोहर देश होगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है (मलाकी 3:8-12)।

बाबुल की दासता से लौटने के बाद इस्राएल के लोगों ने दशमांश दिए। दशमांश की मांग मसीह की मृत्यु तक की जाती थी, जिसने नई वाचा दी (इब्रानियों 9:15-17)।

यीशु की मृत्यु से नई वाचा लागू हो जाने के बाद (इब्रानियों 9:15-17) दशमांश के आवश्यक होने की बात कहीं नहीं मिलती। यह शायद इसलिए होगा क्योंकि व्यवस्था में लेवियों और याजकों की सहायता के लिए दशमांश की आज्ञा थी। सब मसीही परमेश्वर के याजक हैं (1 पतरस 2:9; प्रकाशितवाक्य 1:6; 5:10) और व्यवस्था मिट चुकी है (गलातियों 3:24, 25; इफिस्सियों 2:14, 15; कुलुस्सियों 2:14; इब्रानियों 7:12, 19), इसलिए अब दशमांशों की आवश्यकता नहीं रही। अब हम नई वाचा के अधीन हैं जो हमें अपनी आमदनी के अनुसार (1 कुरिन्थियों 16:2) और जैसा मन में ठाना हो (2 कुरिन्थियों 9:7) देने का निर्देश देती है।

नई वाचा मसीही लोगों को देने के लिए कहती है पर यह नहीं कहती कि कितना दें। यदि

हम परमेश्वर से हमें देने की उम्मीद करते हैं, तो हमें उसे देना चाहिए। हमें उसके लिए जो उसने हमें दिया है अच्छे भण्डारी बनना सीखना आवश्यक है। उसने प्रतिज्ञा की है कि हम जैसे उसे देंगे वैसे ही उसी अनुपात में वह हमें देगा (2 कुरिन्थियों 9:6)। क्योंकि हम ऐसे परमेश्वर की सेवा करते हैं जो देता है इसलिए हमें उसकी अगुआई में चलकर उदारता से देना सीखना चाहिए।

मसीही लोगों द्वारा दिए जाने वाले दानों में, धन, सम्पत्तियां, समय और जो कुछ हमारे पास है वह देना हो सकता है। पौलुस ने फिलेमोन से निजी देखभाल और आतिथ्य में सहायता चाही थी (फिलेमोन 20-22)। यह निजी देना था न कि कलीसिया के द्वारा देना था।

मण्डलियों के द्वारा निर्धनों की सहायता के लिए और सुसमाचार का प्रचार करने वालों की सहायता के लिए चंदा इकट्ठा किया जा सकता है (1 कुरिन्थियों 9:6-14; 16:1, 2; फिलिप्पियों 4:15)। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए चंदा रविवार अर्थात सप्ताह के पहले दिन लिया जाना चाहिए जो कलीसिया के लिए इकट्ठा होने का समय है (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)।

नया नियम लाटरियों, जुए या किसी अन्य स्कीम से पैसा इकट्ठा करने की अनुमति नहीं देता। इस तरह लोगों से लिया गया पैसा स्वेच्छा से दिया गया नहीं होता। इन खेलों को खेलने वाले आम तौर पर जीतने के विचार से प्रेरित होते हैं न कि प्रभु को देने की इच्छा से।

सारांश

देना आवश्यक है। जो देते नहीं हैं उन्होंने यीशु जैसे बनना नहीं सीखा है, जो हमें देना सिखाने के लिए आया (2 कुरिन्थियों 8:9)। उसने हर मानक से सब दानों से बड़ा दान दिया।

जो कुछ परमेश्वर ने हमें दिया है उसके भण्डारी होने के कारण हम परमेश्वर के प्रति जावबदेह हैं कि उसका जो उसने हमारे हाथों में दिया है इस्तेमाल कैसे करते हैं।

किसी भी चीज़ पर बिना सोचे समझे पैसा लौटाना हमें उदार नहीं बना देता। उदार हम तभी बनते हैं जब उसका जो हमारे पास है प्रबन्ध इतनी समझदारी से करते हैं कि जो आवश्यक है हम उसकी सहायता कर सकें।

टिप्पणियां

[1]विलियम डब्ल्यू. हाऊ, ''वी गिव दी बट दाइन ओन,'' *सौंग्स ऑफ़ फ़ेथ एंड प्रेज़,* संक. व संपा. ऑल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)।